Aparajitha

सफलता के बीज

अक्टूबर – दिसंबर 2019

जागरुकता से परिवर्तन

32

अंक

केवल निजी संचरण के लिए

नमस्ते!

जब विद्यार्थियों की शैक्षिक ज़रूरतों को समझकर, अधिकारी उसके लिए काम करते हैं, तो उसके प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। इस पत्रिका के पहले तीन विभागों में ऐसे प्रयासों का विवरण दिया गया है। विभाग चार में बताया गया है कि, जीवन कौशल शिक्षा से किशोर विद्यार्थियों व शिक्षकों में किस तरह का परिवर्तन आया है। विभाग पाँच में, निरौपचारिक शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थियों पर, जीवन कौशल शिक्षा के प्रभाव के बारे में बताया है।

∞ ∞ ∞ ∞

सफलता के बीज पत्रिका के द्वारा हम पिछले आठ वर्षों से आपको टिम टिम तारे से जुड़ी बातों, उसके विकास और उसके प्रभाव के बारे में बताते रहे हैं। जनवरी 2020 से, यह एक समाचार पत्र के रूप में आपके सामने आएगा। मुख्य घटनाओं की संक्षिप्त जानकारी के साथ एक वेब लिंक दिया जाएगा जहाँ पर उससे संबंधित पूरी जानकारी होगी। यह कुछ इस प्रकार होगा:

> हरियाणा के शिक्षा विभाग ने कक्षा 6, 7 और 8 के विद्यार्थियों के लिए, गड़पुरी में 16 सितंबर से 7 अक्टूबर के बीच, एक एडवेंचर कैम्प आयोजोत किया। कैम्प के दौरान TTT के पाठ भी दिखाए गए।
> https://www.aparajitha.org/tim-tim-tare-adventure-camps-in-haryana/

आपके निरंतर सहयोग और सुझावों की आशा करते हुए -

संपादकीय टीम

विषय-सूची

नमस्ते! 2

राजस्थान में 3

हिमाचल प्रदेश में 4

हरियाणा में 4

गुजरात में 5

तमिलनाडु में 7

गूँज 8

अपराजिथा फाउंडेशन्स
5A, वी.पी.रथिनासामी रोड
बीबीकुलम
मदुरई- 625002.

0452-4375252

info@aparajitha.org

टिम टिम तारे, कक्षा *7* से *12* के विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षण प्रदान करता है। डबल्यूएचओ *(WHO)* द्वारा दिए गए दस कौशलों की सूची के आधार पर बनाए गए ये पाठ विद्यार्थियों को सुखद आनुभविक शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राथमिक स्तर पर ये पाठ शिक्षकों की पुस्तिका के आधार पर और माध्यमिक व उच्च स्तर पर विडियो द्वारा करवाए जाते हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है विद्यार्थियों को ज़िम्मेदार नागरिक बनाना और *2008-2009* के दौरान इसे *5* उच्च माध्यमिक स्कूलों में प्रारंभ किया गया था। *2009-10* में इसे तमिलनाडु सरकार द्वारा, तमिल नाडु के सभी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों में लागू किया गया। इसके पश्चात, ये प्राथमिक स्कूलों, सरकार की सहायता से चलने वाले निजी स्कूलों और इस कार्यक्रम में रुचि दिखाने वाले आन्य स्कूलों में लागू किया गया। अब यह कार्यक्रम6राज्यों में कार्यान्वित है- तमिल नाडु, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणा।

राजस्थान में . . .

एज्यूकेशन एन्ड रिसर्च नेटवर्क (ERNET), इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत आनेवाली एक वैज्ञानिक संस्था है। राजस्थान में शैक्षिक कार्यक्रम इस संस्था द्वारा प्रसारित किए जाते हैं।

राजस्थान सरकार स्कूल शिक्षा के प्रिंसिपल सेक्रेटरी **डॉ आर. वेंकटेसवरन** ने निर्देश दिया है कि टिम टिम तारे का प्रसारण इस नेटवर्क के द्वारा किया जाए। इसके परिणामस्वरूप, प्राथमिक शिक्षा के निर्देशक **श्री ओम प्रकाश केसरा जी** ने 2 अगस्त 2018 को यह निर्देश जारी किया कि 33 जिलों के 34 DIET (जिला शिक्षा व प्रशिक्षण केंद्र) केंद्रों में इसका प्रसारण किया जाए।

पहला प्रसारण 28 अगस्त 2019 को उदयपुर के DIET केंद्र में, जिला कलेक्टर **सुश्री आनंदी जी (आई.ए.एस),** की उपस्थिति में किया गया। इस निर्देश से 33 जिलों की 1320 स्कूलों में पढ़ने वाले 4,16,000 विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा का लाभ मिल रहा है।

हिमाचल प्रदेश में . . .

5 मार्च 2019 को हुए एक समझौते के तहत टिम टिम तारे को हिमाचल प्रदेश में शुरू किया गया। शिक्षकों को 13 जून से 25 जुलाई के बीच प्रशिक्षण दिया गया। इसके बाद दूरसंचार अधिकारियों की सहायता से, टिम टिम तारे के पाठों का प्रसारण 12 DIET केंद्रों से जिले के विभिन्न स्कूलों में किया गया। 12 सितंबर 2019 को, जिला अधिकारियों की उपस्थिति में एक राज्य स्तरीय बैठक के दौरान राज्य प्रोजेक्ट निर्देशक श्री, आशीष कोहली जी के साथ जीवन कौशल शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण और टिम टिम तारे को राज्य में लागू करने के बारे में चर्चा हुई।

हरियाणा में . . .

हरियाणा शिक्षा विभाग, कक्षा 6-12 के विद्यार्थियों के लिए टिम टिम तारे के विडियो पाठ प्रसारित करता रहा है। हर वर्ष कुछ चुनिंदा विद्यार्थियों के लिए एक एडवेंचर कैम्प आयोजित किया जाता है। यह कैम्प 16 सितंबर से 7 अक्टूबर 2019 के दौरान, कक्षा 6, 7 और 8 के विद्यार्थियों के लिए, राष्ट्रीय युवा संस्थान गड़पुरी, पलवल जिले में आयोजित किया गया। चार अलग-अलग बैचों में 1188 विद्यार्थियों (लड़के व लड़कियाँ) और 132 शिक्षकों (महिलाएँ व पुरुष) ने इसमें भाग लिया। किशोर विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करने के लिए टिम टिम तारे के विडियो पाठ दिखाए गए।

गुजरात में . . .

TTT का गुजराती रूप, टिम टिम तारा, गुजरात के प्राथमिक विद्यालयों में छह वर्ष पूर्व शुरू किया गया। वर्ष 2016 से कस्तुरबा आवासीय स्कूल और जनवरी 2019 से, उच्च व उच्च माध्यमिक विद्याल्यों में यह कार्यक्रम चल रहा है। विद्यार्थियों और संयोजकों को इस कार्यक्रम से जो लाभ हुआ, उसके बारे में उन्होंने हमें बताया।

आवासीय स्कूलों में . . .

सेजलबेन पटेल कस्तुरबा कन्या विद्यालय, गिरिनगर, सतपुड़ा तालुक, डांग जिले की प्रधानाचार्या हैं।

उन्होंने हमें बताया, “यहाँ रहने वाली लड़कियाँ बिल्कुल पिछड़े हुए गाँवों से आती हैं। उन्हें जीवन कौशल के बारे में कुछ भी पता नहीं है। हम उन्हें टिम टिम तारा के विडियो दिखाते हैं। वे पूरे उत्साह के साथ खेल, अभिनय और गीतों में भाग लेती हैं। उनके व्यवहार में बहुत परिवर्तन आया है। टिम टिम तारे के पाठ, जैसे कि दूसरों का आदर करना, लैंगिक समानता, लक्ष्य बनाना, बरबादी को रोकना इत्यादि से उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। इसके परिणामस्वरूप उनमें काफी बदलाव देखे गए हैं। उदाहरण के लिए, पहले वे एक-दूसरे से कुछ सामान लेते थे तो धन्यवाद नहीं देते थे। पर अब वे आभार प्रकट करने लगे हैं और एक-दूसरे की सराहना भी करने लगे हैं। अब वे पानी व बिजली की बरबादी को रोकने के लिए, सही समय पर बत्तियाँ व पंखे बंद कर देते हैं और नल से पानी भी नहीं टपकने देते। पहले वे असहमती प्रकट करते समय चिल्लाते या झगड़ते थे, पर अब वे मतभेद को दूर करने के लिए चर्चा करते हैं। परीक्षा के समय हमें उन्हें बार-बार सलाह देनी पड़ती थी, लेकिन अब वे अपने लक्ष्य खुद बनाते हैं और आत्मविश्वास के साथ परीक्षा देते हैं। उन्हें परीक्षा का तनाव भी नहीं होता है। टिम टिम तारा के पाठ सिखाते-सिखाते मेरा ध्यान भी और केंद्रित होने लगा है और मैं खुद में भी सकारात्मक परिवर्तन देख रही हूँ।”

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में . . . .

नारायण गुरू विद्यालय से कक्षा 11 की छात्रा **काशवी पटेल** ने अपने अनुभव के बारे में बताया: “पढ़ाई के संबंध में, टिम टिम तारा के विडियो से मुझे बहुत मदद मिली। उदाहरण के लिए, पेरामिशियम के आकार को याद रखने के लिए स्मरण-शक्ति के पाठ में काफी अच्छे सुझाव दिए गए थे। पाठ की मुख्य बातों को याद रखने के लिए नेमोनिक्स की तकनीक भी काम आई। इससे मुझे सारी बातें अच्छी तरह और लंबे समय तक याद रहती हैं और हम रट्टा मार कर पढ़ने से भी बच जाते हैं।”

रांदेसन, गांधीनगर के जे.एस. विद्यामंदिर में पढ़ रहे, कक्षा 11 के छात्र **महेश ठाकोर** ने कहा, “मैं दसवीं कक्षा के बाद विज्ञान पढ़ना चाहता था, पर मेरे माता-पिता को लगा कि यह मेरे लिए बहुत कठिन होगा और परिवार की परिस्थितियों की वजह से वे भी मेरी मदद नहीं कर पाएँगे। उनकी हिचकिचाहट के बावजूद मैंने विज्ञान लिया। अब मैं टिम टिम तारा के विडियो देखता हूँ जिसमें कठिन परिश्रम के बारे में बताया गया है। मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बहुत-सी बाधाओं को पार करना पड़ता है। अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मैं हर तरह के प्रयास करूँगा और सफल होकर दिखाऊँगा।” महेश का आत्मविश्वास वास्तव में सराहनीय है।

इसी कक्षा से **मानसी प्रजापति** ने अपने अनुभव कुछ इस तरह से व्यक्त किए: “परीक्षा के पहले देर रात तक जागना मेरी आदत बन गई थी। इससे मैं थक जाती थी और मेरी आँखें जलने लगती थीं। टिम टिम तारा के विडियो देखकर मैंने सीखा कि मुझे देर रात तक नहीं जागना चाहिए और बीच-बीच में आराम भी करना चाहिए। मैंने यह भी सीखा कि शांत जगह पर बैठकर पढ़ाई करनी चाहिए। अब मैं इन बातों को गंभीरता से समझकर इन पर अमल करती हूँ। पहले मैं अपने पेन, पेंसिल इत्यादि घर से निकलते वक्त ही ढूँढ़ती थी। अब मैं रात को ही सारा सामान व्यवस्थित करके रख देती हूँ ताकि परीक्षा के लिए जाने से पहले कोई तनाव न हो।”

जिन शिक्षकों और विद्यार्थियों ने टिम टिम तारे के विडियो देखें हैं, उन्होंने अपने इन छोटे-छोटे अनुभवों के बारे में हमें बताया। हमें विश्वास है कि इसी तरह बूँद-बूँद से हम अगली पीढ़ी में एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

तमिलनाडु में . . .

तमिलनाडु के कई छात्रावासों, स्कूलों, कॉलेजों और गैर-सरकारी संस्थानों में थलिर थिरन थिट्टम चल रहा है। इसे आगे बढ़ाते हुए, पिछले दो वर्षों से सायं काल में चलने वाले स्कूलों के 25,500 विद्यार्थियों को भी जीवन कौशल शिक्षा दी जा रही है। इन 850 स्कूलों में, प्रत्येक स्कूल में केवल एक शिक्षक है। ये स्कूल तिरुवल्लुर, कांचीपुरम, चेंगलपट्टु और नागपट्टिनाम जिलों में स्थित हैं।

SVRDS के कॉओरडिनेटर श्री पी.बी. विजयराघवन कहते हैं: "एक शिक्षक द्वारा संचालित, सभी सायं काल स्कूल पिछड़े हुए गाँवों में हैं। औपचारिक और सामान्य शिक्षा के तरीके, पढ़ाई को उबाऊ बना देते हैं, इसलिए हमने थलिर थिरन थिट्टम का प्रयोग किया। पढ़ाई की जगह खेल-कूद में अधिक रुचि रखने वाले इन बच्चों को TTT की गतिविधियाँ रोचक लगीं और इन्होंने उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। इस प्रणाली से कुछ भी सीखना काफी आसान होता है और रोचक भी। इस वजह से धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थी भी चीज़ों को जल्दी सीख जाते हैं। इस तरीके को अपनाने के बाद विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ गया है और वे पढ़ने-लिखने में ज़्यादा रुचि लेने लगे हैं।"

गूँज!

थलिर थिरन थिट्टम को मेरी बधाई। इससे बहुत-से बच्चों को फायदा हुआ है। अपने उद्देश्य की ओर बढ़ते हुए यह धीरे-धीरे और उत्कृष्टता से देश के कई कोनों में पहुँच गया है। इससे यह स्पष्ट है कि भविष्य में अपराजिथा को और भी बड़ी सफलताएँ प्राप्त होने वाली हैं।

- डॉ. कमलम शंकर

(सेवानिवृत्त) तमिल प्रोफेसर चेन्नई, तमिल नाडु

आपके विकास और कई प्रकार के कार्यों से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इस पत्रिका से संक्षिप्त में सारी जानकारी हमें मिल जाती है और मैं इसे बहुत रुचि से पढ़ता हूँ।

- डॉ. एस. राधाकृष्ण

हैदराबाद, तेलंगाना

फिर से आपको बहुत-बहुत बधाई हो। पूरी टीम के निरंतर प्रयास देखकर मुझे बहुत खुशी हुई!

- सेलवी संतोषम

प्रमुख – एडमिन TVS लक्ष्मी विद्या संघम, मदुरई, तमिल नाडु

आपका भविष्य और भी उज्जवल हो। प्रभु की कृपा आप पर बनी रहे।

- लक्ष्मी किशोर

बैंगलुरू

यह जानकर खुशी हुई कि हिमाचल प्रदेश भी अब इस कार्यक्रम से जुड़ गया है। आने वाले समय में और भी राज्य इसके साथ जुड़ जाएँ, यही हमारी कामना है। विद्यार्थियों में आ रहे परिवर्तन को ठीक से समझने के लिए मोबाइल एप का प्रयोग एक सराहनीय कदम है। इससे समय बचेगा और सही आँकड़े भी मिल जाएँगे।

- एम बालगुरू

मुख्य फैसिलिटीज़ एडमिनिसट्रेटर अपराजिथा ग्रुप, मदुरई, तमिल नाडु

पत्रिका की खबरें पढ़कर खुशी हुई। बधाई और शुभकामनाएँ!

- आयेशा बरीन

एसोसिएट बिज़नेस मेनेजर ACSL, चेन्नई, तमिलनाडु

ग्रीष्मकालीन कैम्प केवल पाँच दिनों के लिए हुआ था, पर उसका प्रभाव हम पूरे वर्ष तक देख रहे हैं। विद्यार्थी रोज़ ही उसके बारे में चर्चा करते हैं और अगले वर्ष के कैम्प में शामिल होने के लिए अभी से इंतज़ार कर रहे हैं।

- टी. मधुसुदनन

मेनेजर, अपराजिथा कोरपोरेट सर्विसेज़ प्राइवेट लिमिटेड, मदुरई तमिलनाडु